रविवारीय

पाक सेना और सत्ता के बीच टकराव तय

अमेरिका के वैदेशिक हितों के चक्रव्यूह में बुरी तरह फंस चुके शाहबाज शरीफ और जनरल मुनीर

डॉ.ब्रह्मदीप अलूने

पाकिस्तान की आंतरिक अशांति को खत्म करने के लिए सेना,देश को हार्ड स्टेट बनाना चाहती है. बलूच आतंकवादियों द्वारा एक यात्री ट्रेन का अपहरण करने के बाद जनरल मुनीर देश को कठोर राज्य में बदलने की बात करते रहे है. अमेरिका के वैदेशिक हितों के चक्रव्यूह में बूरी तरह फंस चूके शाहबाज शरीफ और फील्ड मार्शल जनरल मुनीर गजा से लेकर अफगानिस्तान तक नाकाम हो रहे है. गजा में शांति को लेकर शर्म-अल-शेख समझौते के कभी भी टूट जाने की आशंका के बीच पाकिस्तान अपने बीस हजार सैनिकों को गजा में भेजने को तैयार हो गया है. शर्म अल-शेख़ सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य गाजा में युद्ध को समाप्त करने के लिए एक अंतिम समझौते तक पहुँचना बताया गया था लेकिन वहां कोई युद्द विराम हुआ नहीं है और गजा में इजराइल के हमलें जारी है.

पाकिस्तान को शर्म-अल-शेख में ट्रम्प ने खास सहयोगी बताकर शाहबा? शरीफ का खूब महिमा मंडन किया था. शरीफ पाकिस्तान में इसे बड़ी सफलता कूटनीतिक बताकर राजनीतिक बढ़त लेने की कोशिश कर रहे थे. लेकिन गजा में जिस प्रकार इजराइल ने हमलें किए है उससे कट्टरपंथी शाहबाज शरीफ के खिलाफ हो रहे है. वहीं फील्ड मार्शल असीम मुनीर को अमेरिकी प्यादा बताकर कट्टरपंथी तत्व पाकिस्तान की सेना के खिलाफ भी हो गए है. पाकिस्तान की आंतरिक व्यवस्था अस्त व्यस्त है और यहां पर इजराइल विरोधी शक्तियां प्रभावशील है. इसमें से एक खतरनाक राजनीतिक और कट्टरपंथी संगठन तहरीक-ए-लब्बैक है.

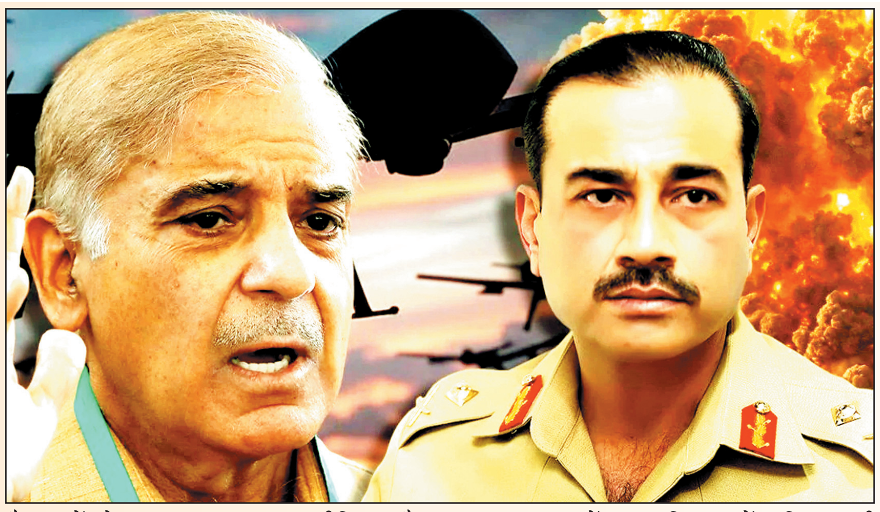

पाकिस्तान की फेडरल कैबिनेट ने तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान को आतंकवाद-रोधी अधिनियम-1997 के तहत प्रतिबंधित संगठन घोषित कर दिया है. टीएलपी का देश में बढ़ा प्रभाव है और इससे पाकिस्तान में हिंसा भड़कने की आशंका बढ़ गई है. तहरीक-ए-लब्बैक इजराइल का अस्तित्व स्वीकार नहीं करती और वह पाकिस्तान के राजनीतिक रुख का विरोध कर रही है. तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान पाकिस्तान का सबसे खतरनाक आतंकी संगठन है जिसकी स्थापना 2007 में हुई थी. यह संगठन अफगान तालिबान से वैचारिक रूप से जुड़ा हुआ है और पाकिस्तान में शरीयत आधारित इस्लामी शासन स्थापित करना इसका मुख्य उद्देश्य है.

बलूचिस्तान में सुरक्षा स्थिति अस्थिर है और अगस्त 2021 में अफगानिस्तान में तालिबान की जीत के बाद से यह और भी बिगड़ती जा रही है. बलूचिस्तान दक्षिण पश्चिम पाकिस्तान, ईरान के दक्षिण पूर्वी प्रांत सिस्तान और अफगानिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत तक फैला हुआ है. इसका अधिकांश इलाका पाकस्तिान के कब्जे में है. पाकिस्तान का यह इलाका सबसे गरीब और उपेक्षित है. हालांकि, प्राकृतिक संसाधानों के लिहाज यह यह सर्वाधिक उपयोगी क्षेत्र है.1948 से बलूचिस्तान पाकिस्तानी कब्जे के खिलाफ संघर्ष कर रहा है. बलूचिस्तान का दावा रहा है कि उन्हें 11 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से आजादी मिली थी लेकिन पाकिस्तान इसे अपना हिस्सा मानता रहा है. पाकिस्तानी सेना ने कई बार बलूच आंदोलन को निर्मम तरीके से खत्म किया है. भारत के विभाजन के बाद से ही बलूचिस्तान में एक राष्टवादी आंदोलन चल रहा है. बलूचिस्तान के लोगों का मानना है कि भारत पाकिस्तान बंटवारे के वक़्त उन्हें ज़बरदस्ती पाकिस्तान में शामिल कर लिया गया,जबकि वो खुद को एक आजाद मुल्क़ के तौर पर देखना चाहते थे. बलूच निवासी खुद को पाक के अधीन नहीं रखना चाहते. बलोच राष्ट्रवाद उनके अलग देश बनाने की चाह का नतीजा है.1947 में पाकिस्तान के निर्माण के बाद से ही बलूच राष्ट्रवादियों और केंद्र सरकार के बीच संबंध टकरावपूर्ण रहे हैं,जो समय-समय पर हिंसक होते रहे हैं. बलोच राष्ट्रवादी नेता अकबर खान बुगती की पाकिस्तानी सेना द्वारा 2006 में हत्या कर दी गई थी. इस अभियान का आदेश जनरल परवेज मुशर्रफ ने दिया था जो तब देश के सैन्य प्रमुख और राष्ट्रीय दोनों थे. बुगती,बलूचिस्तान की आबादी की लड़ाई के बढ़ सम्मानित चेहरे माने जाते थे,उनकी हत्या से विवाद गहरा गया और यह हिंसक संघर्ष के रूप में अब भी जारी है. पाकिस्तान की सेना बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा में शांति की स्थापना के लिए किसी भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को खत्म करना चाहती है,और उसे सेना के हवाले करना चाहती है .

बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा को सेना के हवाले करना पाकिस्तान के लिए गंभीर परिणाम ला सकता है. सैन्य शासन से स्थानीय असंतोष और विद्रोह की भावना और भड़क सकती है. इन प्रांतों में सेना के कठोर रवैये से आम जनता में गुस्सा बढ़ रहा है. पाकिस्तान में आंतरिक विघटन की आशंका बढ़ रही है और शाहबाज शरीफ जनरल मुनीर के गहरे दबाव में काम कर रहे है. जाहिर है शाहबाज शरीफ यदि सेना के दबाव में कार्य करते रहे तो उनकी राजनीतिक पार्टी का भविष्य अधर में पड़ जायेगा,ऐसे में जल्द ही पाकिस्तान में सेना और शरीफ के बीच टकराव बढ़ सकता है.

(लेखक विदेशी मामलों के जानकार हैं.)

वापसी की तैयारी

मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उना भारती एक बार फिर चर्चाओं में है. उमा भारती की अक्सर चर्चा उनके बयानों को लेकर ही होती है. इस बार चर्चा में आने वी वजह 2029 का लोकसभा चुनाव है. उमा भारती की इच्छा एक बार फिर चुनाव अपनी इच्छा से नहीं लड़ा या पार्टी ने उन्हें टिकाट नहीं दिया, इसे लेकर विरोधाभाषी नहीं? उमा भारती 2014 में उतरप्रदेश के झांसी से लोकसभा का चुनाव लड़ी थी. इसके बाद उन्होंने कोई भी चुनाव नहीं लड़ा. यहापि उनकी सक्रियता मध्यप्रदेश में बनी रही. राजनीतिक गतिवधियों में वे जरूर सक्रिय नहीं दिखी. शिवराज सिंह चौहान की सरकार में उन्होंने अहाते बंद कराने के लिए शराब की दुकानों पर पत्थर तक फेंके. शिवराज सिंह चौहान ने चुनावी खाल में राजनीतिक नुकसान से बचने के लिए अपनी शराब नीति बदली और अहातों की व्यवस्था को समाप्त कर दिया.

उमा भारती की इच्छा मध्यप्रदेश की राजनीति में वापस आने की रही है. वर्ष 2005 में शिवराज सिंह चौहान को मुख्यमंत्री बनाने के विरोध के बाद जो राजनीतिक नुकसान उमा भारती को हुआ, वह किसी और नेता का इतना नहीं हुआ. उन्होंने नई पार्टी बनाकर मध्यप्रदेश के विधानसभा चुनाव में अपने उम्मीदवार उतारे थे. इन उम्मीदवारों के मैदान में होने से जो नुकसान भाजपा और शिवराज सिंह चौहान को होना चाहिए था, वह नहीं हुआ. शिवराज सिंह चौहान भाजपा की सरकार बचाने और बनने में सफल रहे. राजनीतिक तौर पर भी वे मजबूत हुए. जब उमा भारती को पार्टी में वापस लेने की बात शुरू हुई तो उन्होंने अपनी सहमति इस शर्त पर दी कि वे मध्यप्रदेश छोड़कर उत्तरप्रदेश चली जाए. पार्टी मान भी गई. 2011 में उन्हें उत्तरप्रदेश को चरखारी विधानसभा सीट पर उप चुनाव लड़ने के लिए भेजा गया. जीत दर्ज कराने के बाद वे उत्तरप्रदेश की राजनीते में सक्रिय बनी रहीं. 2014 के लोकसभा चुनाव में मिली जीत के बाद केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र गोदी के नेतृत्व में बनी सरकार में जल संसाधन विभाग का मंत्री बनाया गया. उन्हें गंगा शुद्धिकरण का काम भी दिया गया.

उमा भारती राजनीति में कब क्या स्टैंड लें, कोई नहीं जानता. उनकी इस आदत के करण ही समर्थकों की संख्या भी तेजी से घटी है. उमा भारती ने इसकी परवाह लभी नहीं की. वे अपने बयानों से लगातार चर्चा में बनी रहीं. व्यापमं मामले से (जब उनका नाम जुड़ा, तब भी उनकी मुखरल बरकरार रही. उन्होंने पूरे मामले को षड्यंत्र करार देते हुए मानले की निष्पक्ष जांच भी करने की मांग की थी. उमा भारती का चेहरा ही वह चेहरा है, जिसके कारण भारतीय जनता पार्टी 2003 में मध्यप्रदेश में सरकार बनाने में सफल रही थी दिग्विजय सिंह के राजनीतिक प्रबंधन को शिकस्त भी उमा भारती के चेहरे के कारण ही मिली. उमा भारती व्यक्तिगत और राजनीतिक दोनों ही फैसले अक्सर भावुकता में आकर लेती हैं. 2004 में उन्होंने अपने पद से इस्तीफा भी भावनाओं में बहकर ही दिया था. मामला कर्नाटक के हुबली का था. इसमें अदालत ने गैर जमानती वारंट जारी किया था. उमा भारती ने इस्तीफा दिया तो पार्टी ने उनके कहने पर बाबूलाल गौर को मुख्यमंत्री बना दिया.

व्यंग्य

हे जनार्दन कब जागोगे....

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

यदि आप से सवाल किया जाए कि देश को आजादी मिलने के बाद सबसे अधिक फायदा किस को हुआ ? तो बतलाइए आपका जवाब क्या होगा. शायद आप इसके जबाव में कहेंगे नेताओं का . तब हम कहेंगे एक दम गलत जवाब. भाई कुछ नेताओं को तो फायदा होना ही था. क्योंकि उन्होंने शायद आज़ादी के आंदोलन की अगुआई ही इसलिए की थी. उन्हें पहले से ही मालूम था कि इस समय देश की जनता अनपढ़ और थोड़ा में ही खुश होने वाली है. उन पर ताजी ताजी मिली आज़ादी का खुमार सवार है. इसे चने के झाड़ पर चढ़ा कर, उस झाड़ पर अपना उल्लू सीधा किया जा सकता है. पिछले 70-75 साल से यही हो रहा है. चुनाव दर चुनाव जनता को चने के झाड़ पर चढ़ा कर उस पर अपना उल्लू बैठा दिया जाता है. उस चने के झाड़ को कभी समाजवाद तो कभी साम्यवाद तो कभी पूंजीवाद का नाम दे दिया जाता है. जबकि उस झाड़ पर नितांत स्वार्थवाद के फल लगते हैं. आज़ादी मिलते ही नेताओं ने हमें बताया कि जनता ही उनके लिए जनार्दन हैं. स्वयं को जनार्दन बताए जाने पर हम फूल कर कुप्पा हो गए. हमें खुदा जो बता दिया गया था. जनार्दन के नाम पर हम को बेवकूफ बना कर ठगा गया.

आपको बता दें कि जब व्हाट्सएप, ईमेल और सोशल मीडिया नहीं थे. उस समय किसी की कुशल क्षेम पूछने और अपने हाल ए दिल बताने के लिए चिट्ठी लिखी जातीं थीं. उसमें संबंधित को यथा योग्य संबोधन करने के बाद लिखा जाता था यहां सब कुशल मंगल है. आशा है वहां भी कुशल मंगल होंगे. चिट्ठी में आगे यह जरूर लिखा जाता था कि थोड़ा लिखा है बहुत समझना. उसी तरह आज़ादी के बाद नेताओं ने जो आप हम को थोड़ा दिया उसे बहुत समझ लेने के लिए हमें बरगलाया. हमें यह बताया गया कि इसी में ही आनंद है. कुढ़ने से क्या फायदा . बड़े बुजुर्गों ने पहले से ही यह सिखाया है संतोषी सदा सुखी. उसी संतोष की तिलक लगाएं हम तब से अब तक घूम रहे हैं. खैर, यह बहस और रोना धोना तो चलता ही रहा है और आगे भी चलता रहेगा. क्योंकि चलना ही जिंदगी है और रुकना सीधे परम् ब्रह्म परमेश्वर से मिलने जैसा है. क्योंकि लोग भले ही ईश्वर, अल्लाह, जीसस और वाहे गुरु को सुबह, शाम, उठते, बैठते, खाते,पीते, सोते जागते बेचारे ईश्वर या खुदा को टेम- बेटेम याद कर चैन से न रहने दें. पर यह भी सच्चाई है कि जिस दिन उसने तुम को याद कर लिया तो सोचो उस दिन फ़िर क्या होगा. इसे राहुल गांधी के शब्दों में कहें तो कहेंगे. खेल खत्म, फिनिश, टाटा- बाय बाय. उसके बाद तो फिर कुछ भी नहीं रह जाता है. और कुछ रहता है तो खाली खाली डब्बा है खाली खाली बोतल है कुछ भी नहीं रह जाता है....

अब हम अपने मूल सवाल और आपके जवाब पर लौटते हैं. माफ़ कीजिए यह मन तो बड़ा ही चंचल है जरा में यहां जरा में वहां ? न मैं जानू न तुम जानो. हां तो सवाल यह था कि आजादी मिलने का सबसे ज्यादा लाभ किसे मिला. आपका जवाब होगा, नेताओं को. तो अफसोस..,भाइयों ये जवाब हंड्रेड परसेंट ग़लत हैं. नेताओं ने तो आपके हित में वह काम किया कि जो काम भगवान भी नहीं कर सकते थे. ना भूतों न भविष्यते. हमारे देश के नेता तो बहुत ही दयालु हैं. जैसे ही देश को आज़ादी मिलने के बाद पहला आम चुनाव हुआ उन्होंने आप और हम जैसी तुच्छ साधारण जनता को जनार्दन बना दिया. जनार्दन का मतलब समझते हैं न जी. जनार्दन का मतलब होता है भगवान और खुदा. नेताओं ने आपको को खुदा बना दिया और बेचारे वे बाखुदा नाखुदा बन गए. भला कोई कर सकता है इतना बड़ा त्याग ? कि खुद तो असुर बन जाए और जनता को देवता बना दे. ऐसा काम कोई दयालु और त्यागी ही कर सकता है और उन्होंने ऐसा किया भी. आप कहोगे कि नेता भ्रष्टाचारी हैं. पापी हैं, चोर हैं,अधर्मी हैं . तो भैया आप ही बताओ उन्होंने नेता बनकर आपके होने वाले इन संभावित दुर्गुणों को अपना कर हम और आप को इन पापों से बचा के तो रखा है. यदि वे यह काम नहीं करते तो आप और हम यह करते और पाप के भागी बन जाते. मरने के बाद जब हम नरक में जाते और आपको उबलते हुए तेल के कड़ाहे में पकौड़े की तरह पकाया जाता तब कैसा लगता ? इस धरती पर पहले से ही नेताओं ने आपको क्या कम पकाया है. कभी जाति के नाम पर तो कभी मज़हब के नाम पर, कभी ऊंच नीच और अमीर गरीब के नाम पर वैसे ही पकाया है जैसे ईंटों को भट्ठों में पकाया जाता है . सोचो हमारे नेता कितने उपकारी हैं जिन्होंने ये सभी पाप स्वयं करके हमें नरक में जाने से बचा रखा है. हम को तो ऐसे उदारमना नेताओं का आभारी होना चाहिए.

हमारे देश के एक सूबे में बड़े भले नेता हुए हैं. उन्होंने अपने सूबे में किसी व्यक्ति के बालिग होने तक की उम्र की अवधि तक जनता को भगवान मान कर उनकी पूजा की. वह पहले दिन से कहा करते थे ये सूबा मेरा मंदिर हैं और आप मेरे भगवान हैं और में आपका पुजारी हूं . उन्होंने जनता की बरसों तक ऐसी सेवा की, कि उन पर झमाझम लक्ष्मी माता प्रसन्न हो कर धन – धान्य बरसने लगीं. बड़े बड़े लंबे चौड़े खेत, खलिहान और ट्रैक्टर हो गए. दूध दही की नदियां बहने लगीं. डेयरी में गाय भैंसों ने दूध दही के भंडार भर दिए. यह होता है जनता की सेवा का फल. भगवान के घर देर भले ही हो अंधेर कतई नहीं है. वो जब देता है तो फिर छप्पर फाड़ के देता है. भगवान जैसे उनके दिन फिरे है लक्ष्मी मैया ऐसे दिन सभी के पलटे . भाइयों इसमें अफसोस करने की कोई बात नहीं है, सोचो यदि तुम भी जन सेवा करते, तो भैया तुम भी मेवा खाते. अब तुम को तो जनार्दन बना कर बैठा दिया गया . अब चुपचाप भगवान टुकुर टुकुर सुनते रहो दुनिया के दु:ख दर्द. भगवान तो भावना के भूखे होते हैं. थोड़ा सा भजन और प्रसाद पा कर खुश हो जाते हैं और दे डालते हैं वरदान, चिरंजीवी भव: . यही हाल सियासी दुनिया के जनार्दनों आपका है,आप भी चना चिरौंजी में ही खुश हो कर उन्हें ठका ठक, ठका ठक वोट रूपी वरदान देते रहते हो. तो, है लोकतंत्र के जनार्दनों उठो और जागो .

चर्चा में आईजी गौरव राजूपत

नशे से उपजी नाराजरगी

रीवा के रेंज आईजी गौरव राजूपत इन दिनों चर्चा में हैं. उनकी चर्चा रीवा संभाग में कोरेक्स कफ सीरप की अवैध बिक्री को लेकर हो रही है. सरकार ने जून 2023 में अधिसूवना जारी कर क्लोफेनिरामाइन और कोडीन युक्त कफ सिरप पर प्रतिबंध लगा दिया था. इसके बावजूद भी ऐसे कफ सिरप का उत्पादन जारी है. रीवा संभाग में इस कफ सीरप का सबसे ज्यादा उपयोग नशेड़ी कर . रहे हैं. पूरे विध्य प्रदेश में कफ सीरप की खाली शीशी गली-मोहल्लों के कचरे में. देखी जा सकती है. प्रतिबंध के बाद भी दवा बिक रही है तो चिंता कलेक्टर को भी होना चाहिए और एसपी को भी, लेकिन संभाग के किसी भी जिले के एसपी ने. कफ सीरप पर रोक लगाने के लिए कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं की है.

रीवा रेंज में कुल जिले रीता, सतना, सीभी, शहडोल, सिंगरोली, मऊगंत और मैहर आते है. इन सभी जिलों में कफ सीरप का उपयोग नशे के लिए किया जा रहा है. रेंज, के आईजी गौरव राजपूत की चर्चा होने की वजह यह बयान है जो उन्होंने कफ सीरप की बिक्री में पुलिस की भूमिका को लेकर दिया. गौरव राजपूत ने साफ तौर पर कहा कि कफ सीरप की थानेदार से मिलीभगत के बिना यह बिक्री नहीं हो सकती ?

गौरव राजपूत के इस बयान पर राजनीति होना स्वभाविक है. प्रतिपक्ष के नेता ने इसके जरिए सरकार पर हमला बोला. राजपूत का पुलिस वालों की. भूमिका को लेकर दिया गया बयान बड़ा स्वभाविक बयान था. लगभग हर बड़ा. पुलिस अफसर अपने अधीनस्थों को डाटने-फटकारने के लिए यह कहता. रहता है कि बिना मिलीभगत के अवैध करोबार संभव नहीं है. रीवा संभाग में कोरेक्स कफ सीरप के कारोबार से सताधारी दल भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के जुड़े होने की खबरें भी सामने आती रहती हैं. पुलिस की कार्यवाही में ढिलाई होने को सरक्षण के तौर पर देखा जाता है.

छिंदवाड़ा में कफ सीरप से हुई बच्चों की मौत के बाद गौरव राजपूत नहीं चाहते कि इस तरह की घटना रीवा रेज में हो. यही कारण है कि वे नशे के खिलाफ लगातार अभियान चला रहे हैं. डॉ. मोहन यादव की सरकार भी इसे अपनी प्राथमिकता में रखकर काम कर रही है. गौरव राजपूत 2004 बैच के आईपीएस अधिकारी है. मूल रूप से विदिशा जिले के निवासी हैं.

सितंबर 2004 में वे सेवा में आए थे. मार्च 1980 का जन्म है. 24 साल की उम्र में आईपीएस अफसर बन गए थे. आईजी के पद पर उनकी पदोन्नत वर्ष 2022 में हुई थी. उस वक्त उनकी उम्र 41 साल थी. वे सबसे कम में उम्र में आईजी बनने वाले पहले अधिकारी थे. उनके रिकार्ड को उत्तराखंड के अरूण मोहन जोशी ने तोड़ा. वे चालीस साल की उम्र में आईजी बन गए. तिवारी 2004 बैच के आईपीएस है. गौरव राजपूत, मध्यप्रदेश में हमेशा सुर्खियों में रहे हैं. नौ साल पहले भी वे जब वे कटनी के पुलिस अधीक्षक थे. उन पर अवैध रूप से शराब का करोबार करने वाले व्यक्ति को संरक्षण देने का आरोप लगा. सरकार ने पद से हटा दिया. जांच भी आदेशित की गई. जांच भी सरकार ने कराई.

जांच के कारण

डीआईजी के पद पर होने वाली पदोन्नति भी देर से मिली. पदोन्नति के लिए उन्हें कानूनी लड़ाई भी लड़ना पड़ी थी. उन्होंने विभिन्न जिलों में पुलिस अधीक्षक के तौर पर और गृह विभाग में सचिव सहित कई महत्वपूर्ण पदों पर काम किया है. रीवा आईजी के तौर पर पहली बार उनकी चर्चा तबादलों को लेकर हुई. राजपूत ने 36 पुलिस अधिकारियों के तबादले सिंगल आदेश से निरस्त कर दिए. आरोप थे कि रिटायरमेंट के पूर्व तत्कालीन आईजी एमएस सिकरवार ने रिटायर होने के पहले बड़े पैमाने पर तबादले किए थे. उनके तबादलों की नीति से कुछ लोग खुश थे तो कुछ नाराज. नाराज पुलिसकर्मी कोर्ट की शरण में भी गए थे. पांच माह बाद पहुंचे आईजी गौरव सिंह राजपूत ने दिसंबर 2024 में किए गए पुलिसकर्मियों के ट्रांसफर आर्डर निरस्त कर दिए. इनमें से कुछ ने पद ग्रहण कर लिए थे, जबकि कुछ छुट्टी पर थे. इस आदेश पर आईजी गौरव सिंह राजपूत की प्रशंसा हुई. शायद यही वजह होगी कि उन्होंने एक आदेश और निकाला. इस आदेश में कहा गया कि रेंज में उनकी स्वीकृति के बिना कोई तबादला नहीं होगा. यानी, एसपी नहीं, आईजी के साइन से पुलिसकर्मियों के तबादले होंगे. आईजी गौरव सिंह राजपूत का यह आदेश भोपाल पहुंचा तो तकनीकी पेंच उलझ गया. नई तबादला नीति जारी हो गई थी, जिसके चलते राजपूत द्वारा जारी किया गया आदेश निरस्त कर दिया गया.

भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रही है दुनिया

कृष्णमोहन झा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत अपने व्याख्यानों में इस बात को विशेष रूप से रेखांकित करते हैं कि आज सारी दुनिया संकट के दौर से गुजर रही है और उसे इससे बाहर निकालने में भारत को महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करना है. इसी लिए सारी दुनिया भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रही है. संघ प्रमुख ने विगत दिनों जबलपुर में स्वामी नारायण संस्था द्वारा आयोजित जीवन उत्कर्ष महोत्सव के मंच से अपने इस मंतव्य को पुन: दोहराते हुए कहा कि दुनिया भारत से यह अपेक्षा इसलिए रखती है क्योंकि भारत ने अपनी संस्कृति और आध्यात्मिकता की धरोहर को आज भी संजोकर रखा है और उसने हमेशा धर्म और संस्कृति के मार्ग का अनुसरण किया है. यही कारण है कि भारत ने समय समय पर दुनिया को सही मार्ग दिखाने का दायित्व निभाने में सफल हुआ है. भागवत ने कहा कि सामान्य भाषा में संस्कृति का अर्थ है संस्कार युक्त आचरण.एक दूसरे के प्रति सद्भावना और आत्मीयता का भाव होने से समाज में सौहार्द्र बना रहता है अन्यथा शत्रुतापूर्ण संबंध होते हैं और झगड़े बढ़ते हैं.

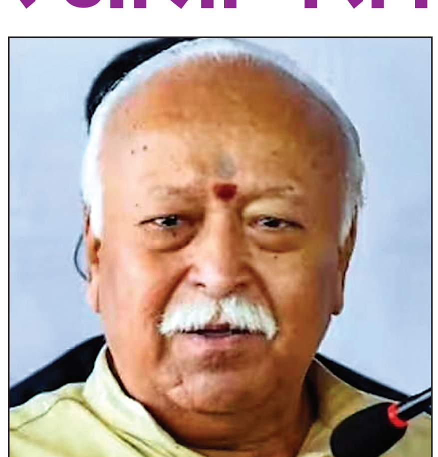

संघ प्रमुख ने कहा कि वास्तव में हम सब एक हैं और एक दूसरे से जुड़े हुए हैं. यह जुड़ाव भारत के पास है दुनिया के पास नहीं है इसलिए दुनिया भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रही है. संघ प्रमुख ने जोर देकर कहा कि यह जुड़ाव संतों की वजह से है.संत ईश्वर का अंश हैं . संत और भगवंत में कोई अंतर नहीं है. संतों की वाणी समाज को उचित मार्ग दिखाती है इसीलिए संघ के स्वयंसेवक संतों की सेवा में हैं. संघ प्रमुख ने कहा कि संतों के प्रवचन चलते रहें इसलिए हम डंडा लेकर खड़े हैं. यही हमारी संतों के प्रति सेवा है.संघ प्रमुख ने कहा कि यदि हमें ज्ञान नहीं है, वेद पुराण मालूम नहीं है तो भी संत आपके भाव की वजह से आपके साथ रहकर आपका उद्धार कर सकते हैं.इस अवसर पर मोहन भागवत ने बताया कि वे दीर्घकाल से अक्षर धाम स्वामी नारायण संस्था से जुड़े रहे हैं और प्रमुख स्वामी महाराज से उनकी भेंट होती रही है. इसके साथ ही महंत स्वामी महाराज के साथ भी वे सतत संपर्क में रहे हैं.

बीएपीएस स्वामी नारायण संस्था के आध्यात्मिक गुरु ईश्वरी चरण स्वामी भी इस पंच दिवसीय जीवन उत्कर्ष महोत्सव के उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे.यह कार्यक्रम बीएपीएस संस्था के आध्यात्मिक प्रमुख महन्त स्वामी महाराज के जीवन और शिक्षा को समर्पित है. इस अवसर पर संघ प्रमुख ने स्वामी भद्रेशदास की एक पुस्तक का विमोचन भी किया. पुस्तक की विषय वस्तु को महत्वपूर्ण बताते हुए संघ प्रमुख ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालने वाली यह पुस्तक हमें अनुभूति कराती है कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए. हमें इसका पालन कर स्वयं को सुधारना है और साथ के लोगों को भी सुधारना है इसके साथ ही पूरे देश को भी सुधारना है क्योंकि सारी दुनिया ने भारत से उम्मीदें लगा रखी हैं.

उल्लेखनीय है कि दुनिया भर में स्वामी नारायण संस्था से जुड़े 200 से अधिक प्रमुख संत जीवन उत्कर्ष महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए पहुंचे. गौरतलब है कि विश्व के 55 से अधिक देशों में अक्षरधाम स्वामी नारायण संस्था के लगभग 1800 अधिक मंदिर हैं.

मध्यप्रदेश सरकार के वरिष्ठ मंत्री राकेश सिंह ने भी इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई . राकेश सिंह ने मंच से दिए गए अपने भाषण में महंत स्वामी महाराज की निस्वार्थ सेवा भावना और विनम्रता को स्तुत्य बताते हुए उनके जीवन को सभी के लिए अनुकरणीय बताया और जबलपुर में भी स्वामी नारायण संस्था के भव्य मंदिर के निर्माण की अभिलाषा व्यक्त की . इस गरिमामय कार्यक्रम में ज्ञानेश्वर स्वामी जी महाराज ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त करते हुए दूसरों के उत्कर्ष में सहयोग को ही सेवा का श्रेष्ठ मार्ग बताया.

बीएपीएस स्वामी नारायण संस्था के पंच दिवसीय भव्य जीवन उत्कर्ष महोत्सव में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव की उपस्थिति भी उल्लेखनीय रही. इस अवसर पर उन्होंने अपने भाषण में सनातन संस्कृति को अद्भुत बताते हुए कहा कि संस्कारों की जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है और उत्तम संस्कारों से जीवन में बदलाव आता है. मोहन यादव ने कहा कि अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की संभावनाओं को बलवती बनाने की सामर्थ्य भारत के पास है इसीलिए भारत को दुनिया विश्व गुरु के रूप में देखती आई है. मुख्यमंत्री ने अबूधाबी में बीएपीएस स्वामी नारायण संस्था द्वारा निर्मित हिंदू मंदिर को अद्भुत बताते हुए कहा कि जबलपुर में आयोजित इस पंच दिवसीय जीवन उत्कर्ष महोत्सव में स्वामी नारायण संस्था के प्रमुख महन्त की उपस्थिति हम प्रदेश वासियों के लिए गौरव का विषय है. इस अवसर पर मुख्यमंत्री मोहन यादव की इस घोषणा का विशेष रूप से स्वागत किया गया कि चलो बनें आदर्श कार्यक्रम के अंतर्गत स्वामी नारायण संस्था द्वारा मध्यप्रदेश के स्कूलों में छात्रों को नैतिक शिक्षा प्रदान की जाएगी. इसी तरह संस्था द्वारा देश के 30 विश्वविद्यालयों और 200 महाविद्यालयों में संचालित इंटीग्रेटेड पर्सनेलिटी डेवलपमेंट कार्यक्रम जबलपुर के रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय और एक निजी महाविद्यालय में भी प्रारंभ किया जाएगा.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)